



तेरे सीने में ज़ली कहीं आग़ है

नाम -आरती

पिता - श्री कर्म बीर

माता -श्रीमती सरोज शर्मा

शिक्षा - एम० ए०,(NET)

----- तेरे सीने में ज़ली कहीं आग़ है ----- (1)

--

तेरे सीने में ज़ली कहीं आग़ है ।

फ़िर क्यूँ तू अब-तक चुपचाप है ॥

--

सत्य, अहिंसा, त्याग, नहीं आसान ।

फ़िर क्यूँ तेरा ये संस्कार है ॥

--

वक्त ने दिए गहरे घाव है ।

फ़िर क्यूँ तूझे अब-भी नाज़ है ॥

--

ताज़ा ज़ख्मों के अमिट निशान है ।

फ़िर क्यूँ तेरी ख़ामोशी ही जुबान है ॥

--



-----सूरज की पहली किरण छाई ----- (2)

--
सूरज की पहली किरण छाई ।

मन में आशा लहराई ॥

--
पेड़-पौधों की गहराई ।
धरती पर रोनक लाई ॥

--
चाँद की चाँदनी ।
विश्वासों में भरमाई ॥

--
धरती पर लगी आग ।
बारिश ने बुझाई ॥

--
बूँद जब-जब ले अंगड़ाई ।
धरती-गगन मिलन हो जाई ॥

--

-----कहाँ से आई ये बहार ----- (3)

न फटा कपड़ा, न फटी दीवार ।
फिर न ज़ाने कहाँ से आई ये बहार ॥

--
न उपवन में फूल खिले, न मंदिर में दीप जले ।
फिर न ज़ाने गगन से कैसे आई ये फुहार ॥

--
न ज़लने का निशान मिला, न नाश हुए मन के घाव ।
फिर न ज़ाने तन ने कैसे किया ये श्रृंगार ॥